Dr DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT. OF PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA) MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:-6206696451

Meaning of personality

व्यक्तित्व क्या है? इसके समबन्ध में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों का अपना अलग अलग मत है। व्यक्तित्व शब्द पर्सनैलिटी का हिन्दी रूपांतर है। यह शब्द लैटिन के परसोना से विकसित है जिसका अर्थ होता है नकली चेहरा। प्राचीन काल में व्यक्तित्व का अभिप्राय शारीरिक रचना, रंगरूप ,वेशभूषा इत्यादि से लगया जाता था। जो व्यक्ति बाह्य गुणों से जितना अधिक प्रभावित कर सकता था वह उतना ही अधिक प्रभावशाली माना जाता था।परन्तु वास्तविकता यह है कि व्यक्तित्व का निर्धारण एक ही प्रतिकारक से नही होता।व्यक्तित्व के निर्धारण में अनेक प्रतिकारक का हाथ होता है।व्यक्तित्व की परिभाषा

भी मनोविज्ञान के विकास के साथ -साथ विकसित हुई है।गिलफोर्ड के अनुसार चार प्रतिकारक व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते है और इसके कारण ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

1. सामाजिक अनुक्रिया:-

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को समाजिक अनुक्रिया का प्रभाव मानते है । एक व्यक्ति पर दूसरे व्यक्ति का जो प्रभाव परता है वही व्यक्तित्व है।समाज में जिसका व्यक्तित्व अधिक प्रभावी होता है वह उतना हि अधिक प्रभावशाली तथा प्रतिष्ठित व्यक्तित्व माना जाता है।

2. सर्वव्यापी तत्त्व:-

इसके अनुसार व्यक्तित्व विभिन्न शारीरिक तथा मानसिक क्रियाओं का योग माना जाता है। साहचर्यवादी मनोवैज्ञानिकों का मत है कि व्यवहार का निर्धारण साहचर्य के नियमों के अंतर्गत होता है।

3. संगठन पर बल:-

इस मत के अनुसार व्यक्तित्व किसी एक तत्व या शक्ति की उपज नहीं है वरन वह तो अनेक तत्त्वों के संगठन पर बल देता है।

4. सम्पूर्ण मत:-

इस मत के अनुसार व्यक्तित्व सम्पूर्ण व्यक्तित्व है ।

गिलफोर्ड ने इन चार प्रभावी प्रतिकारको को व्यक्तित्व की विचारधाराओं के रूप में भी अभिव्यक्त किया है।समाजशास्त्रियों के मत के अनुसार- " व्यक्तित्व उन समस्त गुणों का संगठन है जो कि समाज में व्यक्ति का कार्य तथा पद निश्चित करता है।इस प्रकार व्यक्तित्व को समाजिक प्रभावकर्ता के रूप मे माना जा सकता है"।